



श्रीगणेशाय नमः



दाहावली



गोमहादेवस्य दासकृत ॥

जिसमें ज्ञान भक्ति वैराग्य मिश्रित दोहे हैं और  
विशेष कर संतोष की शिक्षा प्रधान है ॥

सम्पूर्ण रामभक्तानुरागियों के उपकारार्थ

— नवलविशार —

62

— लखनऊ —

हंशी नवलविशार ( सी, आई, ई ) के छापेखानेमें छ

१९०० ई० ॥



श्रीगणेशायनमः ॥

## दोहावली ॥

दोहा ।

राम वामदिशि जानकी लपण दाहिनी ओर ॥ ध्यान सकल  
कल्याणमय सुरतरु तुलसी तोर १ सीता लपण समेत प्रभु सो-  
हत तुलसीदास ॥ हरपत सुर वरपत सुमन सगुण सुमंगलवास २  
पंचवटी बट विटपतरु सीतालपण समेत ॥ सोहत तुलसीदास प्रभु  
सकल सुमंगल देत ३ चित्रकूट सब दिन बसत प्रभु सियलपण  
समेत ॥ रामनाम जय जाय कहि तुलसी अभिमत देत ४ पय  
अहार फल खाइ जो रामनाम पठमास ॥ सकल सुमंगल सिद्धि  
सब करतल तुलसीदास ५ रामनाम माणि दीप धरु जीह देह-  
रीद्वार ॥ तुलसी भीतर बाहिरो जो चाहसि उजियार ६ हियनिर्गुण  
नयनन सगुण रसनानाम सुनाम ॥ मनहुँ पुरट संपुट लसत तुल-  
सी ललित ललाम ७ सगुण ध्यानरुचि सरसनहिं निर्गुण मनते  
दूरि ॥ तुलसी सुमिरहु रामको नाम सजीवनमूरि ८ एकछत्रयक  
मुकुटमणि सबवर्णहु पर जोय ॥ तुलसीरघुवर नामके वरणविराजत  
दोय ९ रामनामको अङ्कहै सबसाधनहैसून ॥ अङ्कगये कछु हाथ  
नहिं अङ्करहे दशगून १० नाम रामको कल्पतरु कलि कल्याण  
निवास ॥ जो सुमिरतभयो भागते तुलसीतुलसीदास ११ रामनाम  
जपि जोहजन भये सुकृतसुख शालि ॥ तुलसी यहां जो आलसी  
गयो आजुकीकालि १२ नामगरीबनिवाजकोराजदेत जनजोन ॥



तुलसी मन परहरत नहिं घुरबिनियाकी वोन १३ काशी विधि  
 बसि तनु तजै हठ तन तजै प्रयाग ॥ तुलसी जो फल सो सुलभ  
 राम नाम अनुराग १४ मीठो अरु कठवति भरो रौताई अरु पेम ॥  
 स्वारथ परमारथ सुलभ राम नाम के प्रेम १५ राम नाम सुमिरत  
 सुयश भाजन भये कुजात ॥ कुतरु कुसुरपुरराज मग लहतभुवन  
 बिख्यात १६ स्वारथ सुख सपनेहु अगम परमारथ परवेश ॥ राम  
 नाम सुमिरत मिटहिं तुलसी कठिन कलेश १७ मोर मोर सब कह  
 कहसि तू को कहु निज नाम ॥ कै चुप साधहि सुन समाधि कै  
 तुलसी जपु राम १८ हम लखु हमहिं हमार लखु हम हमार के  
 बीच ॥ तुलसी अलखहि का लखहि राम नाम जपु नीच १९ राम  
 नाम अवलम्ब बिनु परमारथ की आश ॥ बर्षत बारिद बूंद गहि  
 चाहत चढ़न अकाश २० तुलसी हठि हठि कहत नित चित सुन  
 हितकर मान ॥ लाभ राम सुमिरन बड़ी बड़ी बिसारे हान २१  
 बिगरी जन्म अनेक की सुधरै अबहीं आज ॥ होहि रामकी राम  
 जपु तुलसी तजि कुसमाज २२ प्रीति प्रतीति सुरीतिसों रामनाम  
 जपु राम ॥ तुलसी तेरोहै भलो आदि मध्य परिनाम २३ दम्पति  
 रस रसना दशन परिजन बदन सगेह ॥ तुलसी हर हित वरण  
 शिशु सम्पति सहज सनेह २४ वर्षाऋतु रघुपति भगति तुलसी  
 शालिसुदास ॥ रामनाम वर वरणजग सावन भादों मास २५ राम  
 नाम नरकेशरी कनककशिपु कलिकाल ॥ जापक जन प्रह्लाद  
 जिमिपालहिं दल सुरसाल २६ रामनाम कलिकाल तरु सकल  
 सुमङ्गलकन्द ॥ सुमिरत करतलसिद्धि सब पगपग परमानन्द २७  
 राम नाम कलिकामतरु रामभाकि सुरधेनु ॥ सकल सुमङ्गल मूल  
 जग गुरुपदपङ्कज रेनु २८ यथा भूमि वश बीजमें नखत निवास



अकास ॥ रामनाम सब धरममय जानत तुलसीदास २६ सकल  
 कामनाहीन जे रामभक्तिरस लीन ॥ नाम प्रेम पीयूष हृद तिनहुँ  
 किये मन मीन ३० ब्रह्मराम ते नाम बड़ बरदायक बरदान ॥ राम  
 चरित शतकोटि महुँ लिय महेश जिय जान ३१ शबरी गीधसु-  
 सेवकन सुगति दीन्ह रघुनाथ ॥ नाम उधारे अमित खल वेद वि-  
 दित गुण गाथ ३२ राम नाम पर रामते प्रीति प्रतीति भरोस ॥ सो  
 तुलसी सुमिरत सकल सगुन सुमंगलकोस ३३ लङ्क विभीषण  
 राज कपि पति मारुत खग मीच ॥ लही राम सो नाम रतिचाहत  
 तुलसी नीच ३४ हरन अमंगल अघ अखिल करन सकल क-  
 ल्याण ॥ राम नाम नित कहत हर गावत वेद पुराण ३५ तुलसी  
 प्रीति प्रतीतिसों राम नाम जपु जागु ॥ किये होय विधि दाहिनो  
 देइ अगेही भागु ३६ जल थल नभगति अमित अति अग जग  
 जीव अनेक ॥ तुलसी तोहिं से दीनको राम नामगत एक ३७  
 राम भरोसो राम बल राम नाम विश्वास ॥ सुमिरि नाम मंगल  
 कुशल मांगत तुलसीदास ३८ राम नामरति रामगति राम नाम  
 विश्वास ॥ सुमिरत शुभमंगल कुशल चहुँदिश तुलसीदास ३९  
 रसना सांपिनि बदन बिल जे न जपहिं हरिनाम ॥ तुलसीप्रेम न  
 रामसों ताहि बिधाता बाम ४० हिय फाटहु फूटहु नयनजरउतेतन  
 केहिकाम ॥ द्रवहिं सबहिं पुलकहिं नहीं तुलसी सुमिरत राम ४१ राम  
 हिंसुमिरत रण भिरत देत परत गुरुपाय ॥ तुलसी जिनहिं न पुलक  
 तन ते जग जीवत जाय ४२ ॥ सोरठा ॥ हृदय सो कुलिश स-  
 मान जो न द्रवहिं हरिगुण सुनत ॥ करन रामगुण गान जीहसो  
 दादुर जीहसम ४३ सबै न सलिल सनेहु तुलसी सुनि रघुबीर  
 यश ॥ ते नैना जनिदेहु रामकरहु बरु आंधरे ४४ रहै न जलभरि



पूरि राममुयश सुन रावरी ॥ तिन आंखिन में धूरि भर भर मूठी  
 मेलिये ४५ वारक सुमिरत तोहिं होहिं तिनहिं सनमुख सदा ॥  
 क्यों न सम्हारहि मोहिं दयासिंधु समरस्थके ४६ साहिवहोत स-  
 रोष सेवक को अपराध सुनि ॥ अपने देखे दोष राम न कबहूं उर  
 धरे ४७ ॥ दोहा ॥ तुलसीरामहि आपुते सेवककीरुचिमीठि ॥ सीता  
 पतिसे साहिवहि कैसे दीजै पीठि ४८ तुलसी जाके होयगी अंतर  
 बाहर दीठि ॥ सो क्यों कृपालहि देइगो केवट पालहि पीठि ४९ प्रभु  
 तरुतर कपि डारपर कीन्हें आपु समान ॥ तुलसी कहूं न रामसों  
 साहिव शीलनिधान ५० रे मन सब सों निरसकै सरस राम सों  
 होहि ॥ भलो सिखावन देत है निशिदिन तुलसी तोहि ५१ हरे  
 चरहिं तापहिं बरे फरे पसारहिं हाथ ॥ तुलसी स्वारथ मीत सब  
 परमारथ रघुनाथ ५२ स्वारथ सीताराम सों परमारथ सियराम ॥  
 तुलसी तेरो दूसरे द्वार कहाकहु काम ५३ स्वारथ परमारथ सकल  
 सुलभ एकही ओर ॥ द्वार दूसरे दीनता उचित न तुलसी तोर ५४  
 तुलसी स्वारथ रामहित परमारथ रघुवीर ॥ सेवक जाके लषण से  
 पवनतनय रणधीर ५५ ज्यों जगबैरी मीन को आपु सहितपरि-  
 वार ॥ त्यों तुलसी रघुवीर विनु गति आपनी विचार ५६ रामप्रेम  
 विन दूबरो रामप्रेमही पीन ॥ रघुवर कबहूं करहिंगे तुलसी ज्यों  
 जरुमीन ५७ राम सनेही रामगति रामचरणरति जाहि ॥ तुलसी  
 फल जगजन्मको दियो विधाता ताहि ५८ आपु आपनेते अ-  
 धिक जेहि प्रिय सीताराम ॥ तेहिके पगकी पानहीं तुलसी तन  
 कोचाम ५९ स्वारथ परमारथ रहित सीताराम सनेह ॥ तुलसीसो  
 फल चारिको फल हमारमत एह ६० जेजन रखे विषयरस चिकने  
 रामसनेह ॥ तुलसी ते प्रिय रामको कानन बसहिं कि गेह ६१



यथा लाभ संतोष सुख रघुवर चरण सनेह ॥ तुलसी ज्यों मन मूढ़  
 सों जसकानन तसगेह ६२ तुलसी जोपै रामसों नाहिंन सहज  
 सनेह ॥ मूढ़ मुड़ायो बादिही भांड भये तजिगेह ६३ तुलसी श्री  
 रघुबीर तजि करे भरोसो और ॥ सुख संपति की काचली नरकहु  
 नाहीं ठौर ६४ तुलसी परि हरि हरि हरहि पांवर पूजहिं भूत ॥ अंत  
 फजीहत होहिंगे ज्यों गनिकाके पूत ६५ सेये सीतारामनहिं भजेन  
 शंकर गौरि ॥ जन्म गँवायो बादिही रटत पराई पौरि ६६ तुलसी हरि  
 अपमान ते होइ अकाज समाज ॥ राज करत रज मिलगये सदल  
 सकुल कुरुराज ६७ तुलसी रामहिं परिहरे निपट हानिसुनिवेउ ॥ सु-  
 रसरिगत सोई सलिल सुरासरिस गंगेउ ६८ रामदूरि मायाबढ़ति घ-  
 टति जान मनमांह ॥ धूरिहोति रवि दूरि लखि शिरपर पगतरछांह  
 ६९ साहिब सीतानाथसों जबघटिहै अनुराग ॥ तुलसीतबहीं भालते  
 भभरि भागिहै भाग ७० करिहौ कोशलनाथतजि जबहीं दूसरि  
 आस ॥ जहां तहां दुख पाइहौ तबहीं तुलसीदास ७१ बिंधनईधन  
 पाइये सायर जुँरे न नीर ॥ पड़ै उपास कुबेरघर जो विपक्षरघुबीर  
 ७२ वर्षाको गोवर भयो को चहै को करै प्रीति ॥ तुलसी तू अनुभ-  
 वहि अब रामबिमुखकी रीति ७३ सबहि समरथहि सुखद प्रिय अ-  
 च्छमप्रिय हितकारि ॥ कबहुं न काहुहि रामपै तुलसी कहा विचारि  
 ७४ तुलसी उद्यम करमयुग तब जहँ राम सुदीठि ॥ होइसुफलसोइ  
 ताहि सब सन्मुख प्रभुतन पीठि ७५ प्रेम कामतरु परिहरत सेवत  
 कलितरु ठूँड ॥ स्वारथ परमारथ चहत सकल मनोरथ भूँठ ७६ नि-  
 ज दूषण गुण रामके समुझे तुलसीदास ॥ होय भलो कलिकालहु  
 उभय लोक अनयास ७७ कैतोहिंलागै राम प्रिय कै तू प्रभुप्रिय  
 होहि ॥ द्वैमहँ रुचै जो सुगम सो कीवै तुलसी तोहि ७८ तुलसी



द्वैमहँ एकही खेलछांड़ि छल खेलु ॥ कै करु ममता रामसों कै मम-  
 ता पर हेलु ७६ निगम अगम साहेब सुगम राम साचिलो चाह ॥  
 अम्बु अशन अवलोकियत सुलभ सबै जगमाह ८० सम्मुख आ-  
 वत पथिक ज्यों दिये दाहिना वाम ॥ तैसोइ होत सुआपकी त्यों-  
 ही तुलसीराम ८१ राम प्रेमपथ मों वये दिये विषय तनपीठि ॥ तु-  
 लसी केचुलि परिहरे होत सांपहू दीठि ८२ तुलसी जौलों विषय  
 की सुधा माधुरी मीठ ॥ तौलों सुधा सहस्रसम राम भगत सुठसी-  
 ठ ८३ जैसो तैसो रावरो केवल कोशलपाल ॥ तौ तुलसीको है  
 भलो तिहुंलोक तिहुंकाल ८४ है तुलसीके एक गुण अवगुण  
 निधि कहैलोग ॥ भलो भरोसो रावरो राम रीझिये योग ८५ प्री-  
 ति रामसों नीतिपथ चलियराग रिस जीति ॥ तुलसी संतनके मते  
 इहै भक्तिकी सीति ८६ सत्य वचन मानस विमल कपट रहित कर-  
 तूति ॥ तुलसी रघुवर सेवकहि सके न कलियुग धूति ८७ तुलसी  
 सुख जो रामसो दुखी सो निज करतूति ॥ कर्म वचन मन ठीक  
 जेहि तेहि न सकै कलिधूति ८८ नातो नाते रामके राम सनेहस-  
 नेहु ॥ तुलसी मांगत जोरि कर जन्म जन्म विधिदेहु ८९ सब सा-  
 धन को एक फल जेहि जानै सोइ जान ॥ ज्यों त्यों मन मन्दिर  
 बसहिं रामधरे धनुवान ९० जो जगदीश तौ अतिभलो जो महीश  
 तौ भाग ॥ तुलसी चाहत जन्मभरि रामचरण अनुराग ९१ परहु  
 नरक फल चारि शिशु मीचडाकिनी खाउ ॥ तुलसी रामसनेहको  
 जो फल सो जरिजाउ ९२ हितसों हित रतिरामसों रिपुसों बैर वि-  
 हाउ ॥ उदासीन सबसों सरल तुलसी सहजस्वभाउ ९३ तुलसी म-  
 मता रामसों समता सबसंसार ॥ राग न रोष न दोष दुख दास भये  
 भवभार ९४ रामहि डरु करु रामसों ममता प्रीति प्रतीति ॥ तुलसी



निरुपधि रामको भये हारिहंजीति ६५ तुलसी रामकृपालसों कहि-  
सुनाउ गुण दोष ॥ होय दूबरी दीनता परमपीन संतोष ६६ सुमि-  
रण सेवा रामसों साहबसों पहिंचान ॥ ऐसेहु लाभ न ललक जो  
तुलसी नितहितहान ६७ जानेजानन जोइये विनु जानेकोजान ॥  
तुलसी यह सुनि समुझि हिय आनि धरे धनुवान ६८ करमठ कठ-  
मालिया कहै ज्ञानी ज्ञान विहीन ॥ तुलसी त्रिपथ बिहायगो राम  
हुआरे दीन ६९ बाधकसब सबकेभये साधकभये न कोइ ॥ तुलसी  
राम कृपालते भली होय सो होइ १०० शङ्कर प्रिय ममद्रोही शिव  
द्रोही मम दास ॥ ते नर करहिं कलभरि घोर नरकमहँ वास १०१  
विलगविलग सुख संग दुख जियन मरण सोइ रीति ॥ रहे ते राखे  
रामके गये ते उचित अनीति १०२ जाय कहव करतूति विनु जाय  
योग विनु क्षेम ॥ तुलसी जाइ उपाय सब विना रामपद प्रेम १०३  
लोगमँगतु सबयोगही योग जाय विनुक्षेम ॥ त्यों तुलसीके भाव  
गतु रामप्रेम विनु नेम १०४ राम निकाई रावरी है सबहीको नीका ॥  
जो यह सांसी है सदा तौ नीको तुलसीका १०५ तुलसी राम जो  
आदरो खोटो खरो खरोइ ॥ दीपक काजर शिरधरो धरो सुधरो धरोइ  
१०६ तन विचित्र कायर बचन अहि अहार मन घोर ॥ तुलसी  
हरि भये पक्षधर ताते कह सब मोर १०७ लहै न फूटी कौड़िहू को-  
चाहै क्यहि काज ॥ सो तुलसी महंगो कियो राम गरीबनिवाज  
१०८ घर घर मांगे दूक पुनि भूपति पूजे पायँ ॥ ते तुलसी सब  
रामविनु ते अब राम सहायँ १०९ तुलसी राम सुदीठि ते निबल  
होत बलवान ॥ बालि बैर सुग्रीवके कहा कियो हनुमान ११० तु-  
लसी रामहिं ते अधिक रामभक्त जिय जान ॥ ऋणियां राजाराम  
सो धनी भये हनुमान १११ कियो सो सेवक धर्म कपि प्रभु कृतज्ञ



जिय जान ॥ जेरि हाथ ठाढ़े भये वरदायक वरदान ११२ भक्तहेतु  
 भगवान प्रभु राम धरोतनु भूप ॥ किय चरित्र पावन परम प्राकृत  
 नर अनुरूप ११३ ज्ञान गिरा गोतीति अज माया गुणगोपार ॥  
 सोइसच्चिदानन्दघनकरतचरित्र उदार ११४ हिरण्याक्ष भ्रातासहि  
 तबधुकेटम बलवान् ॥ ज्यहिमारे सो अवतरयो कृपासिन्धु भगवान्  
 ११५ शुद्ध सच्चिदानन्दमय कन्द भानुकुलकेतु ॥ चरितकरतनर  
 अनुहरत संसृतसागरसेतु ११६ बाल विभूषण वसन वरधूरिधूमरि  
 तअङ्ग ॥ बालकेलि रघुवर करत बाल बन्धु सबसङ्ग ११७ अनुदिन  
 अवध वधावने नित नव मङ्गल मोद ॥ मुदित मातु पितु लोग  
 लखि रघुवर बालविनोद ११८ राज अजिर राजत रुचिर कोशल  
 पालक बाल ॥ जानु गाणिचर चरितवर सगुण सुमङ्गलमाल ११९  
 नाम ललित लीला ललित ललित रूप रघुनाथ ॥ ललितवसन  
 भूषण ललित ललित अनुज शिशु साथ १२० रामभरतलक्ष्मण  
 ललित शत्रुशमन शुभनाम ॥ सुमिरत दशरथसुवन सब पूजहिं  
 सब मन काम १२१ बालक कोशलपालके सेवक बाल कृपाल ॥  
 तुलसामिन मानस वसत मङ्गल मञ्जु मराल १२२ भक्तभूमिभूसुर  
 सुरभि सुरहित लागि कृपाल ॥ करत चरित धरि मनुज तनुसुनत  
 मिटहि जञ्जाल १२३ निज इच्छा प्रभु अवतरेँ सुरगो दिज हित  
 लागि ॥ सगुण उपासक सङ्ग तहँ रहे मोक्ष सबत्यागि १२४ पर-  
 मानन्द कृपायतन मन परिपूरणकाम ॥ प्रेमभक्तिअनपावनीहमहिं  
 देहु श्रीराम १२५ बारिमथे घृत होय बरु सिकताते बरु तेल ॥  
 बिनु हरिभजन न भवतैर यह सिद्धांत अपेल १२६ हरि माया  
 कृत दोष गुण बिनुहारिभजन न जाहिं ॥ भजिय राम सब काम  
 ताजि अस विचारि मनमाहिं १२७ जो चेतन कहँ जड़ करै जड़ै



करहिं चैतन्य ॥ अससमर्थ रघुनायकहि भजहिं जीवते धन्य १२८  
 श्रीरघुवीर प्रताप ते सिन्धुतरे पाषाण ॥ ते मतिमन्द जे राम तजि  
 भजहिं जाय प्रभु आन १२९ लवनिमेष परमान युग वर्ष कल्प  
 शरचण्ड ॥ भजहिं न मन त्यहि राम कहँ कालजासु कोदण्ड १३०  
 तबलागि कुशल न जीव कहँ सपन्यहुँ मन विश्राम ॥ जबलागि भ-  
 जत न रामपद शोकधाम तजिकाम १३१ बिनु सतसङ्ग न हरिकथा  
 त्यहि बिनु मोह न भाग ॥ मोहगये बिनु रामपद होय न दृढ़ अ-  
 नुराग १३२ बिनु विश्वासै भक्ति नहिं त्यहि बिनु द्रवहिं न राम ॥  
 राम कृपा बिनु सपनेहुँ जीव न लह विश्राम १३३ सोरठा ॥ अस  
 विचारि मन धीर तजि कुतर्क संशय सकल ॥ भजहु राम रघुवीर  
 करुणाकर सन्दर सुखद १३४ भावबश्य भगवान सुखनिधान करु-  
 णाभवन ॥ तजिममता मद मान भजिय सदा सीतारमन १३५  
 कहहिं विमलमतसन्त वेद पुराण विचारिसव ॥ द्रवै जानकीकन्त  
 तब छूटै संसारदुख १३६ बिन गुरुहोइ न ज्ञान ज्ञान कि होइ विराग  
 बिनु ॥ गावहिं वेद पुराण सुख कि लहिय हरिभक्ति बिनु १३७  
 दोहा ॥ रामचन्द्रके भजन बिनु जो चह पद निर्व्वान ॥ ज्ञानवन्त  
 अपि सो नर पशुबिन पूछ विषान १३८ जरो सो सम्पति सदन  
 सुख सुहृद मातु पितु भाइ ॥ ससुख होत जो रामपद करै न सहज  
 सहाइ १३९ सोई साध सुनि समुभिकर राम भक्ति थिरताइ ॥ ल-  
 डिकाईको पैरिबो तुलसी विसरि न जाइ १४० सबै कहावतरामके  
 सबहि रामकी आस ॥ राम कहँ ज्यहि आपनो त्यहिभजु तुलसी-  
 दास १४१ ज्यहि शरीर रति रामसों सोइ आदरे सुजान ॥ रुद्रदेह  
 तजि नेह बश बानरभे हनुमान १४२ जानि रामसेवासरससमुभि  
 करव अनुमान ॥ पुरिखाते सेवकभये हरते भे हनुमान १४३ तुलसी



रघुवर सेवकहि खल ढाँढस मनमाँख ॥ बाजराजके बालकहि लवा  
 दिखावत आँख १४४ रावणरिपुके दाससों कायरकरहिं कुचालि ॥  
 खर दूषण मारीच ज्यों नीच जाहिंगे कालि १४५ पुण्य पाप यश  
 अयशके भावी भाजन भूरि ॥ सङ्कट तुलसीदासको राम करहिंगे  
 दूरि १४६ खेलत बालक ब्याल सँग मेलत पावक हाथ ॥ तुलसी  
 शिशु पितु मातु ज्यों राखत सिय रघुनाथ १४७ तुलसीदिनभल  
 शाहकहँ भली चोरकहँ राति ॥ निशिवासर ताकहँ भलो मानैराम  
 इताति १४८ तुलसी जन निज सुनि समुक्ति कृपासिन्धु रघुराज ॥  
 महँगे माणि कञ्चन किये सोधो जग जल नाज १४९ सेवाशील  
 सनेह बश सुखद सुयोग वियोग ॥ तुलसी ते सब रामसों सुखद  
 सुयोग वियोग १५० चारि चहत मनसा अगम चनक चारिको  
 लाहु ॥ चारि परिहेर चारिको दानि चारि चषचाहु १५१ सूधेमन  
 सूधे बचन सूधी सब करतूति ॥ तुलसीसूधी सकलविधि रघुवरप्रेम  
 प्रसूति १५२ विषाविद बोलनि मधुर मन कटुकर हृदय मलीन ॥  
 तुलसीराम न पाइये भये विषय जलमीन १५३ बचन बेपते जो  
 बनै सो बिगरे परिणाम ॥ तुलसी मनते जो बनै बनी बनाई राम  
 १५४ नीच मीच लै जाइ जो राम रजायसु पाइ ॥ तौ तुलसीतेरो  
 भलो नत अनभलो अघाइ १५५ जातिहीन अघ जन्ममहि मुक्ति  
 कीन असि नारि ॥ महामन्द मन सुख चहहिं ऐसे प्रभुहिं विसारि  
 १५६ बन्धु बधूरत क्यहि कियो बचन निरुत्तर बालि ॥ तुलसीप्रभु  
 सुगरीवकी चितै न कछुकुचालि १५७ बालि बली बलशालिदल  
 सखाकीन्हकपिराज ॥ तुलसीरामकृपालकोविरदगरीवनिवाज १५८  
 कहा विभीषण लैमिलो कहा बिगारीबालि ॥ तुलसीप्रभु शरणा-  
 गतहि सबदिनआयो पालि १५९ तुलसी कोशलपालसोंकोश-



रणागतपाल ॥ भजो विभीषण बंधुभय भंज्यो दारिद्रिकाल १६०  
 कुलिशहुचाहि कठोर अति कोमल कुसुमहुचाहि ॥ चित स्वगेश  
 असरामकर समुभिपरै कहुकाहि १६१ बलकल भूषण फलअशनि  
 विनशय्या दुमप्रीति ॥ तेहिसमय लंकादर्इ यहरघुवरकीरीति १६२  
 जो संपति शिवरावणहिं दीनदिये दशमाथ ॥ सोइ संपदा विभी-  
 षणहिं सकुचि दीनिरघुनाथ १६३ अविचलराज विभीषणहिंदेहिं  
 रामरघुराज ॥ अजहुं विराजत लंकपर तुलसीसहितसमाज १६४  
 कहा विभीषण लैमिल्यो कहा दियो रघुनाथ ॥ तुलसी यह जाने  
 बिना मूढ़मीजिहैहाथ १६५ बैरिबन्धु निशिचरअधम तजो न भरे  
 कलंक ॥ भूँउअर्थ सियपरिहरी तुलसीसोय अशंक १६६ त्यहिस-  
 माज कियो कठिनपन जेहि तौल्यो कैलास ॥ तुलसाप्रभु माहिमा  
 कहौसेवकको विश्वास १६७ सभासभासद निरखिपट पकरिउठाये  
 हाथ तुलसीकिये इगारहौ बसन वेष यदुनाथ १६८ त्राहितीन  
 कहि द्रौपदी तुलसी राजसमाज ॥ प्रथम बढेपट चित विकल चहत  
 चकित निजकाज १६९ सुखजीवन सबकोउचहत सुखजीवनहरि  
 हाथ ॥ तुलसीदाता मांगन्यो द्यखियत अबुध अनाथ १७० कृप-  
 णदेइ पाइयपरो विनसाधन सिधिहोय ॥ सीतापाति सम्मुखसमुभि  
 जोकीजै शुभसोय १७१ दंडकवन पावनकरन चरणसरोजप्रभाउ ॥  
 ऊसरजामहि खलतरहि होइरंकतेराउ १७२ विनहीं ऋतु तरुवर  
 फरहिंशिलाद्रवहिंजलजोर ॥ रामलपण सिय करिकृपा जब चित-  
 वहिं जेहिओर १७३ शिलासो तियभइ गिरितरे मृतक जियेजग  
 जान ॥ रामअनुग्रहसगुनशुभ सुलभ सकल कल्याण १७४ शि-  
 लाशाप मोचनचरण सुमिरहु तुलसीदास ॥ तजहुशोच संकटमि  
 टहिं पूजहि मनकीआस १७५ मेरेजियाये भालुकपि अवध विप्र



को पूत ॥ सुमिरहु तुलसी ताहितू जाको मारुतदूत १७६ काल क-  
 रम गुण दोष जग जीव तिहारे हाथ ॥ तुलसी रघुवर रावरो जान जा-  
 नकीनाथ १७७ रोगनिकर तनु जठरपन तुलसीसँग को लोग ॥  
 रामकृपालय पालिये दीन पालिवे योग १७८ मोसम दीन न दीन  
 हित तुमसमान रघुवीर ॥ असबिचारि रघुवंशमाणि हरहु बिषम भ-  
 वभीर १७९ भवभुवंग तुलसी नकुल डसतज्ञान हरिलेत ॥ चित्रकूट  
 इकऔषधी चितवत होत सचेत १८० हौंहुं कहावत सबकहत राम  
 सहत उपहास ॥ साहब सीतारामसों सेवक तुलसीदास १८१ राम  
 राजराजत सकल धरम निरत नरनारि ॥ राग न रोष न दोष दुखसुलभ  
 पदारथचारि १८२ रामराज संतोषसुख घरबन सकल सुपास ॥ सुरतरु  
 तरु सुरधेनु महि अभिमत भोग विलास १८३ खेती बणि विद्या  
 बणिज सेवा शिल्प सो काज ॥ तुलसी सुरतरु सरिस सब सुफलराम  
 के राज १८४ दंडयतिनकर भेदजहँ नरतक नृत्यसमाज ॥ जीतहु  
 मनहिनसुनियअस रामचंद्रकेराज १८५ कोपे शोचतपीचकर करिय  
 निहारनकाज ॥ तुलसी परमित प्रीतिकी रीति राम के राज १८६  
 मुकुर निरखि मुख रामभू गनत गुनहिं दै दोष ॥ तुलसी से शठ  
 सेवकनि लखि जिन परहि सरोष १८७ सहसनाम सुनि भनित  
 सुनि तुलसी बल्लभ नाम ॥ सकुचत हिय हँसि निरखि सिय धरम  
 धुरंधर राम १८८ गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग  
 पानि ॥ हियहर्षे रघुवंशमाणि प्रीति अलौकिक जानि १८९ तुल-  
 सी बिलसत नखत निशि शरद सुधाकर साथ ॥ मुक्ता भालर  
 भलक जनु राम सुयश शिशुहाथ १९० रघुपति कीरति कामिनी  
 क्योंकहै तुलसीदास ॥ शरद प्रकाश अकाश छवि चारु चिबुक  
 तिलजाम १९१ प्रभु गुणगण भूषण वसन विशद विशेष सुदेश ॥



राम सुकीरति कामिनी तुलसी करतव केश १६२ राम चरित रा-  
 केशकर सरिस सुखद सबकाहु ॥ सज्जन कुमुद चकोर चितहित  
 विशेष बड़लाहु १६३ रघुवर कीरति सज्जननि शीतल खलनिसु-  
 ताति ॥ ज्यों चकोर चप चक्कनि तुलसी चांदनि राति १६४ राम  
 कथा मंदाकिनी चित्रकूट चितचारु ॥ तुलसी सुभग सनेह बन  
 सिय रघुवीर बिहारु १६५ श्याम सुरभि पय विशद अति गुनदक-  
 रहिं सब पान ॥ गिरा ग्राम सिय रामयश गावहिं सुनहिं सुजान  
 १६६ हरिहर यश सुरनर गिरन्ह वर्णहिं सुकवि समाज ॥ हाटी हा-  
 टक घटित चरु रांधे स्वाद सुनाज १६७ तिलपर राख्यो सकल जग  
 विदित विलोकत लोग ॥ तुलसी महिमा रामकी कोउ न जानिबे  
 योग १६८ सोरठा ॥ राम स्वरूप तुम्हार बचन अगोचर बुद्धिपर ॥  
 अविगति अकथ अपार नेति नेति नित निगम कह १६९ दोहा ॥  
 माया जीव सुभाव गुण काल करम महदाद ॥ ईश अंकते बढ़त  
 सभ ईशअंक विनुवाद २०० हित उदास रघुवर विरह बिकल सकल  
 नरनारि ॥ भरत लपण सिय गति समुझि प्रभुचप सदा सुवारि २०१  
 सीय सुमित्रासुवन गति भरत सनेह सुभाउ ॥ कहिबे को शारद  
 सरस जनिबेको रघुराउ २०२ जानहिं राम न कहिसकैं भरतलपन  
 सिय प्रीति ॥ समुझि सो सुनि तुलसी कहत हठ शठताकीरीति २०३  
 सब विधि समर्थ सकल कहि सहिसाँसन दिन राति ॥ भलो नि-  
 बाहो सुनि समुझि स्वामिधर्म सबभांति २०४ भरतहि होइ न राज  
 मद विधि हरि हर पदपाइ ॥ कबहुंक काँजी सीकरनि क्षीर सिन्धु  
 बिनशाइ २०५ संपति चकई भरतचक्र मुनि आयसुखिलवार ॥ ति-  
 हिनिशि आश्रम पीजरा राखेभा भितुसार २०६ सधनचोरसंग मु-  
 दितमन धनीगोहै ज्यों फेट ॥ त्यों सुग्रीव विभीषणहि भई भरतकी



भेंट २०७ रामसराहे भरतउठि मिलेराम समजानि ॥ तदपि विभी-  
 षण कीशपति तुलसी गरन गलानि २०८ भरतश्यामतन रामसम  
 सबगुण रूपनिधान ॥ सेवक सुखदायक सुलभ सुमिरत सब क-  
 ल्यान २०९ लसत लषनमूरतिमधुर सुमिरहु सहित सनेह ॥ सुख  
 संपाति कीरति विजय सगुण सुमंगल गेह २१० नामशत्रुसूदन सु-  
 भग सुखमाशील निकेत ॥ सेवत सुमिरत सुलभसुख सकल सुमं-  
 गलदेत २११ कौशल्या कल्याणमयमूरति करत प्रणाम ॥ शकुन  
 सुमंगल काजशुभ कृपाकरहिं सियराम २१२ सुमिर सुमित्रा नाम  
 जग जेतिय लेहिं सुनेम ॥ सुवनरूपन रिपुदमन से पावहिं पति  
 पद प्रेम २१३ सीताचरण प्रणामकरि सुमिरि सुनाम सुनेम ॥  
 सो तिय होहि पतिदेवता प्राणनाथ प्रिय प्रेम २१४ तुलसीकेवल  
 कामतरु राम चरित्र अराम ॥ कलितरु कपि निश्चर कहत हमहिं  
 किये विधि वाम २१५ मातु सकल सानुज भरत गुरु पुरलोगसु-  
 भाउ ॥ देखत देखत केकयिहि लङ्कापति कपिराउ २१६ सहजस-  
 रल रघुवर वचन कुमति कुटिलकरि जान ॥ चले जौक जिमिवक  
 गति यद्यपि सलिल समान २१७ दशरथ नाम सुकामतरु फलैस-  
 कल कल्याण ॥ धराणि धाम धन धरमसुत सदगुणरूपनिधान २१८  
 तुलसी जान्यो दशरथहि धर्म न सत्य समान ॥ राम तजे ज्यहि  
 लागिवत आपु परिहरे प्रान २१९ राम विरह दशरथ मरण मुनि  
 मन अगम सुमीचु ॥ तुलसी मङ्गल मरणतरु शुचि सनेह जल  
 सींचु २२० सोरठा ॥ जीवन मरण सनाम जैसे दशरथरायको ॥  
 जियत खिलाये राम राम विरह तनु परिहरेउ २२१ दोहा ॥ प्रभुहि  
 बिलोकत गीध गति सिय हित घायल नीचु ॥ तुलसी पाई गीध-  
 पति मुक्ति मनोहर मीचु २२२ विर्त कर्मरत भरत मुनि सिद्ध ऊंच



प्ररुनीच ॥ तुलसी सकल सिहात सुनि गीधराजकी मीच २२३  
 मुये मरत मरि है सकल घरीपहरके बीच ॥ लही न काहू आजलौं  
 गीधराजकी मीच २२४ मुये मुक्त जीवत मुक्त मुक्त मुक्तहूबीच ॥  
 तुलसी सबहीते अधिक गीधराजकी मीच २२५ रघुवर विकल वि-  
 हङ्गलखि सो विलोकि दोउ वीर ॥ सिय सुधिकहि सिय राम कहित जी  
 देह मतिधीर २२६ दशरथते दशगुण भगति सहे तासु करकाजु ॥  
 शोचत बंधु समेत प्रभु कृपासिंधु रघुराजु २२७ केवट निशिचर वि-  
 हँगमृग किये साधु सनमानि ॥ तुलसी रघुवरकी कृपा सकल सुमंगल  
 खानि २२८ मंजुल मंगल मोदमय मूरति मारुत पूत ॥ सकल सिद्ध-  
 कर कमलतल सुमिरत रघुवरदूत २२९ धीरवीर रघुवीर प्रिय सुमिरि  
 समीरकुमार ॥ अगम सुगम सबकाज कर करतल सिद्धि विचार २३०  
 सुखमुदमंगल कुमुदविधु सगुण सरोरुहभानु ॥ करहुकाज सबसिद्धि  
 शुभ आनिहिये हनुमानु २३१ सकल काज शुभसमउभलसगुण  
 सुमंगल जानु ॥ कीरति विजय विभूति भलि हिय हनुमानहि आनु  
 २३२ शूरशिरोमणि साहसी सुमति समीरकुमार ॥ सुमिरत सबसुख  
 संपदा मुदमंगलदातार २३३ तुलसीतनु सरसुख जलज भुजरुज  
 गजवरजोर ॥ दलत दयानिधि देखिये कपिकेशरी किशोर २३४  
 भुजतरु कोटर रोगअहि बरवश कियो प्रवेश ॥ विहँगराज बाहन  
 तुरत काढ़िय मिटै कलेश २३५ बाहु बिटप सुख विहँग थल लगी  
 कुपीर कुआगि ॥ रामकृपाजल सींचिये बेगि दीन हितलागि २३६  
 सोरठा ॥ मुक्तिजन्म महिजानि ज्ञानखानि अघहानिकर ॥ जहँ  
 बस शंभुभवानि सो काशी सेइयकसन २३७ जरत सकल सुरवृन्द  
 विषमगरल जेहि पान किय ॥ तेहि न भजसि मतिमन्द को कृपाल  
 शंकर सरिस २३८ ॥ दोहा ॥ बासरठासनिकेठका रजनी चहुँदि-



शिचोर ॥ शंकर निजपुर राखिये चितै सुलोचन कोर २३६ अपनी  
 बीसो आपुही पुरिहि लगायेहाथ ॥ क्यहिविधि विनती विश्व  
 की करै विश्वके नाथ २४० और करै अपराधकोउ और पावफल  
 भोग ॥ अति विचित्र भगवंत गति कोउ न जानबे योग २४१  
 प्रेमसरी परपंच रुज उपजी अधिक उपाधि ॥ तुलसी भलोसुबेदर्ई  
 बेगि बांधिये व्याधि २४२ हम हमार आचार बड़ भूरि भारघर  
 शीश ॥ हठि शठ परवश परत जिमि कीर कोश कृमिकीश २४३  
 क्यहि मग प्रविशत जाति केहि ज्यों दर्पण में छांह ॥ तुलसीत्यों  
 जग जीवगति करी जीहके नांह २४४ सुखसागर सुखनींद बर  
 सपने सब करतार ॥ माया मायानाथकी को जग जाननहार  
 २४५ जीव सीव सम सुखशयन सपने कछु करतूति ॥ जागत  
 दीन मलीन सोइ विकल विषाद विभूति २४६ सपने होय भिखारि  
 नृप रङ्ग नाकपति होय ॥ जागे लाभ न हानि कछु तिमि प्रपंच  
 जिय जोय २४७ तुलसी देखत अनुभवत सुनत न समुझत नीच ॥  
 चपरि चपेटे देतनित केशगहे करमीच २४८ करमखरी कर मोह  
 थल अंक चराचर जाल ॥ हनत गनत गनि गुणि हनत जगत  
 ज्योतिषी काल २४९ कहिबे कहँ रसनारची सुनिबे कहँ कियका-  
 न ॥ धरिके चितहित सहित सुनि परमार्थहिसुजान २५० ज्ञान  
 कहै अज्ञान विन तमबिनु कहै प्रकास ॥ निरगुण कहै जोसगुण  
 बिनु सो गुरु तुलसीदास २५१ अंक अगुण आखर सगुणसमुझि  
 उभय आपार ॥ खोये राखे आपभल तुलसी चारु विचार २५२  
 परमार्थ पहिंचानि माति लसति विषय लपटानि ॥ निकसि चिता  
 ते अधजरति मानहुं सतीपरानि २५३ शीश उधारन किनकहेउ  
 बरजिरहेप्रियलोग ॥ घरही सती कहावतीजरतीनाहिं वियोग २५४



खरिआ खरी कपूर सब उचित न पियतिय त्याग ॥ कै खरिआ  
 मोहिं मेलिकै बिलम विवेक बिराग २५५ घरकीन्हे घरु जात है  
 घरछांड़े घरजाइ ॥ तुलसी घर बन बीचही राम प्रेमपुरछाइ २५६  
 दिये पीठ पाछे लगै सन्मुख होत पराय ॥ तुलसी संपति छांहज्यों  
 लखि दिन बैठ गवांय २५७ तुलसी अद्भुत देवता आशा देवी  
 नाम ॥ सेये शोक समर्पई विमुख भये अभिराम २५८ सोई सेंबर  
 टेसुवा सेवत सदा बसंत ॥ तुलसी महिमा मोहकी सुनत सराहत  
 संत २५९ करत न समुझत झूठ गुण सुनत होत मतिरङ्क ॥ पा-  
 रद प्रकट प्रपंच मय सिद्धिहि नाउ कलङ्क २६० ज्ञानी तापस शूर  
 कवि कोविद गुण आगार ॥ केहिके लोभ बिडंबना कीन्ह न यहि  
 संसार २६१ श्री मद बक्र न कीन केहि प्रभुता बधिर न काहि ॥  
 मृगनयनी के नयन शर को अस लागि न जाहि २६२ व्यापि र-  
 हेउसंसार महँ माया कटक प्रचंड ॥ सेनापति कामादिभट कपट  
 दंभ पाखंड २६३ तात तीनि अति प्रबल खलु काम क्रोध अरु  
 लोभ ॥ मुनि विज्ञान सुधाम मन करहिं निमिष महँ क्षोभ २६४  
 लोभके इच्छा दंभ बल कामके केवल नारि ॥ क्रोध के परुष वचन  
 बल मुनिवर कहहिं विचारि २६५ काम क्रोध लोभादि मद प्रबल  
 मोहके धारि ॥ तिनमहँ अति दारुण दुखद मायारूपी नारि २६६  
 का नहिं पावक जरिसकै का न समुद्र समाइ ॥ का न करै अबलाप्र-  
 बल क्यहि जग काल न खाइ २६७ जन्मपत्रिका वर्त्तिकै देखहु  
 मनहिं विचारि ॥ दारुण बैरी मीचुके बीच बिराजति नारि २६८  
 दीपशिखा सम युवति रस मनजनि होसि पतंग ॥ भजहि रामतजि  
 काममद करहिं सदा सतसंग २६९ काम क्रोध मद लोभरत गृहासक्त  
 दुखरूप ॥ ते किमि जानहिं रघुपतिहि मूढ़ परे तमकप २७० ग्रह-



गृहीत पुनि बातवश त्यहि पुनि बिच्छी मार ॥ ताहि पियाई बा-  
 रुणी कहहु कौन उपचार २७१ ताहि कि सम्पति सगुण शुभ स-  
 पनेहु मन विश्राम ॥ मूत द्रोहरत मोहवश राम विमुख रतिकाम  
 २७२ कहत कठिन समुझत कठिन साधन कठिन विवेक ॥ होइ  
 घुनाक्षर न्याय ज्यों पुनि प्रत्यूह अनेक २७३ खल प्रबोध जग शोध  
 मन को निरोध कुल शोध ॥ करहिं ते फोकट पचि मरहिं सपनेहु  
 सुख न मुबोध २७४ ॥ सोरठा ॥ कोउ विश्राम कि पाव तात सहज  
 सन्तोष बिनु ॥ चलै कि जल बिनु नाव कोटि यतन पचि पचिमरै  
 २७५ सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ॥ अस  
 विचारि मन माहिं भजिय महामायापतिहि २७६ ॥ दोहा ॥ एक  
 भरोसो एक बल एक आश विश्वास ॥ एक राम घनश्याम हित  
 चातक तुलसीदास २७७ जो घन बरषै समय शिर जो मरि जन्म  
 उदास ॥ तुलसी याचक चातकहि तऊ तिहारी आस २७८ चातक  
 तुलसीके मते स्वातिहु पियै न पानि ॥ प्रेम तृषा बाढ़त भला घटे  
 घटैगी कानि २७९ रटत रटत रसना लटी तृषा सूखि गइ अंग ॥  
 तुलसी चातक प्रेमको नित नूतन रुचि रंग २८० चढ़त न चातक  
 चित कबहुं पिय पयोदके दोष ॥ तुलसी प्रेम पयोधिकी ताते नाप  
 न जोष २८१ बरषि परुष पाहन पयद पंखकरोडुइ टूक ॥ तुलसी  
 परा न चाहिये चतुर चातकहि चूक २८२ उपलवरषि गरजत तराजि  
 डारत कुलिश कठोर ॥ चितौ कि चातक मेघ तजि कबहुं दूसरी  
 ओर २८३ पवि पाहन दामिनि गरज भरिभकोर खरि भीमि ॥  
 रोष न प्रीतम दोष लखि तुलसी रामहिं रीमि २८४ मान राखिबो  
 मांगिबो पियसों नित नवनेहु ॥ तुलसी तीनिउ तब फवै जब चा-  
 तक मतलेहु २८५ तुलसी चातकही फवै मान राखिबो प्रेम ॥ व क्र



बूंद लखि स्वातिहू निदरि निबाहत नेम २८६ तुलसी चातक मां-  
 गनो एक एक धनि दानि ॥ देत जो भूमाजनभरत लेत जो घूटक  
 पानि २८७ तीनि लोक तिहुँ कालमें चातकहीके माथ ॥ तुलसी  
 जासु न दीनता सुनी दूसरे नाथ २८८ प्रीति पपीहा पयदकी प्रकट  
 नई पहिंचानि ॥ याचक जगति कनाउड़ी कियो कनौड़ो दानि  
 २८९ नहिं याचत जल संगृही शीशनाइमहिलेइ ॥ ऐसे मानिहि  
 मांगनेहि को बारिद विन देइ २९० किन किन ज्यायो जगतमें  
 जीवनदायक दानि ॥ भयो कनौड़ो याचकहि पयदप्रेम पहिंचानि  
 २९१ साधन सांसत सब सहत सबहिं सुखद फल लाहु ॥ तुलसी  
 चातक जलधिकी रीति बूझि बुध काहु २९२ चातक जीवनदा-  
 यकहि जीवन समय सुरीति ॥ तुलसी अलख न लखि परै चा-  
 तक प्रीति प्रतीति २९३ जीव चराचर जहँ लगे है सबको हित  
 मेह ॥ तुलसी चातक मन बस्यो घनसो सहज सनेह २९४ डो-  
 लत विपुल बिहँग बन पियत पोषरिन बारि ॥ सुयश धवल चा-  
 तक नवल तुहीं भुवन दशचारि २९५ मुख मीठे मानस मलिन  
 कोकिल मोर चकोर ॥ सुयश धवल चातक नवल रहेउ भुवन  
 भरि तोर २९६ बासबेष बोलनि चलनि मानस मञ्जु मराल ॥  
 तुलसी चातक प्रेमकी कीरति विशद विशाल २९७ प्रेम न परखि-  
 य पुरुषपन पयद सिखावन एह ॥ जगकहै चातक पातकी ऊसर  
 बरपै मेह २९८ होइ न चातक पातकी जीवनदानिन मूढ़ ॥  
 तुलसी गति प्रह्लाद की समुझि प्रेम पथ गूढ़ २९९ गरज आप-  
 नी सबनको गरज करत उरआनि ॥ तुलसी चातक चतुरभो या-  
 चक जानि सुदानि ३०० चरग चंगुगत चातकहि नेम प्रेम की  
 पीर तुलसी परबस हाड़पर परि है पुहुमी नीर ३०१ बंध्यो बाधिक



परयो पुण्य जल उलटि उठाई चोंच ॥ तुलसी चातक प्रेमपट पर-  
 तहु लगी न खोंच ३०२ अंडफोरि कियो चेदुतुख पूगे नीर नि-  
 हारि ॥ गहि चंगुल चातक चतुर डारयो बाहिर बारि ३०३ तुलसी  
 चातक देत सिख सुतहि बारहीबार ॥ तात न तर्पण कीजिये बिना  
 बारिधर धार ३०४ ॥ सोरठा ॥ जियत न नाई नारि चातक घन  
 तजि दूसरहि ॥ सुरसरिहूं की बारि मरत मांगेऊ अरध जल ३०५  
 सुनरे तुलसीदास प्यास पपीहहि प्रेमको ॥ परिहरि चारिउ मास जो  
 अचवै जल स्वातिको ३०६ यांचै बारहमास पियै पपीहा स्वाति  
 जल ॥ जान्यो तुलसीदास जोगवत नेही नेहमन ३०७ ॥ दोहा ॥  
 तुलसी के मत चातकहि केवल प्रेम पियास ॥ पियत स्वातिजल  
 जान जग याचक बारह मास ३०८ आलवाल मुक्काहलनि हिय  
 सनेह तरुमूल ॥ होड़ हेतु चित चातकहि स्वाति सलिल अनुकूल  
 ३०९ विविरसनीतन श्याम हैं बह्मचलनि विषखानि ॥ तुलसीयश  
 श्रवणन सुन्यो शीश समर्थो आनि ३१० उष्ण काल अरु देह-  
 पित मगपंथी तन ऊख ॥ चातक बतियां नारुचे अनजल सींचे  
 रूख ३११ अनजल सींचै रूखकी छायाते बरुघाम ॥ तुलसी चा-  
 तक बहुतहै यह प्रवीणका काम ३१२ एक अङ्ग जो सनेहता नि-  
 शि दिन चातक नेह ॥ तुलसी जासों हितलगै वहि अहार वो देह  
 ३१३ आपु व्याधको रूपधरि कुहौ कुरहहि रागु ॥ तुलसी जो  
 मृगमन मुरै परै प्रेमपट दागु ३१४ तुलसी मन निज द्युतिफुनहि  
 व्याधहि देउ दिखाय ॥ बिछुरत होइ न आंधरो ताते प्रेम न जाय  
 ३१५ जरत तुहिन लखि बनजबन रविदै पीठिपराउ ॥ उदय बि-  
 कस अथवतसकुच मिटै न सहज सुभाउ ३१६ देउ आपने हाथ  
 जल मीनहि माहुर घोरि ॥ तुलसी जिय जो बारि बिनु तौतुदेहि



कवि खोरि ३१७ मकर उरग दादुर कमठ जलजीवन जलगेह ॥  
 तुलसी एकै मीनके है सांचिलो सनेह ३१८ तुलसी मिटै न मरि  
 मिटेहु सांचो सहज सनेहु ॥ मोरशिखावन मूरहं गरजत पलुहत  
 मेहु ३१९ सुलभ प्रीति प्रीतम सबै कहत करत सबकोइ ॥ तुलसी  
 मीन पुनीतते त्रिभुवन बड़ो न कोइ ३२० तुलसी जप तप नेम  
 ब्रत सब सबहीं ते होइ ॥ लहै बड़ाई देवता इष्टदेव जब होइ ३२१  
 कुदिनहित सोहित सुदिन हित अनहित किन होइ ॥ शशिछवि  
 हर रविसदन तउ मित्र कहत सबकोइ ३२२ कै लघु कै बड़ मीत  
 भल सम सनेह दुखसोइ ॥ तुलसी ज्यों घृत मधु सरिस मिलै महा  
 विष होइ ३२३ मान्य मीत सों सुख चहै सो न छुये छल छांह ॥  
 शशि त्रिशंकु केकयी गति लखि तुलसी मनमांह ३२४ कही  
 कठिन कृत कोमलहु हित हठि होइ सहाइ ॥ पलक पानिपर  
 ओड़िअत समुझि कुघाड़ सुधाइ ३२५ तुलसी बरै सनेह दोउ  
 रहित बिलोचन चारि ॥ सुरहिं सेवये आदरहि नींदहि सुरसरि  
 बारि ३२६ रुचै मांगनेहि मांगिबो तुलसी दानहि दानु ॥ आ-  
 लस अनखन आचरज प्रेम पिहानी जानु ३२७ अमिय गारि गा-  
 रेउ गरल मारिकरी करतार ॥ प्रेम बैरकी जननि युग जानहि ब-  
 धन गँवार ३२८ सदा न जे सुमिरत रहहिं मिलि न कहैं प्रियबैन ॥  
 तैपै तिन्ह के जाय घर जिनके हिये न नैन ३२९ हित पुनीत सब  
 स्वारथहि अरि अशुद्ध बिनुजाड़ ॥ निजमुख मानिक सम दशन  
 भूमि परे ते हाड़ ३३० माखी काक उलूक बक दादुर से भये लोग ॥  
 भले ते शुक पिक मोरसे कोउ न प्रेम पथ योग ३३१ हृदय कपट  
 बरवेष धर बचन कहैं गढ़ि छोलि ॥ अबके लोग मयूर ज्यों क्यों  
 मिलिये मन खोलि ३३२ चरण चोंच लोचन रँगो चली मराली



चाल ॥ छीनि नीर विवरण सबै बक उघरत तेहि काल ३३३  
 मिलो जो सरलहि सरलहै कुटिलन सहज विहाइ ॥ शीश हेतु  
 ज्यों बक्रगति ब्यालन बिले समाइ ३३४ कृशधन सखहि न देव  
 दुख मुयहु न मांगव नीच ॥ तुलसी सज्जन की रहनि पावकपानी  
 बीच ३३५ संग सरल कुटिलहि भये हरि हर कहहि निबाहु ॥ ग्रह  
 गनती गति चतुर विधि कियो उदर विनुराहु ३३६ नीच निचाई  
 नहि तजै सज्जनहूके संग ॥ तुलसी चंदन बिटप वसि विन विष  
 भये न भुवंग ३३७ भलो भलाई पै लहै लहै निचाई नीच ॥ सुधा  
 सराही अमरता गरल सराही मीच ३३८ मिथ्या माहुर सज्जनहि  
 खलहि गरल सम सांच ॥ तुलसी छुवत पराय ज्यों पारद पावक  
 आंच ३३९ संतसंग अपर्णकर कामी भवकर पंथ ॥ कहहि साधु  
 कवि कोविद श्रुति पुराण सब ग्रंथ ३४० सुकृत न सुकृती परिहरै  
 कपट न कपटी नीच ॥ मरत सिखावन सादियो गीधराज मारीच  
 ३४१ सुतरु सुजन बन ऊखसम खलटाँकिकारुखान ॥ परहित  
 अनहित लागिसब सांसति हँसति समान ३४२ पियहि सुमनरस  
 अलि बिटप काटिकोलि फल खात ॥ तुलसी तरुजीवै युगल सु  
 मति कुमति की बात ३४३ अवसर कौड़ी जो चुकै बहुरि दियेका  
 लाख ॥ दुइज न चंद्रा देखिये उदय कहा भरिपाख ३४४ ज्ञान  
 अनभलो को सबहि भलो भलेहू काउ ॥ सींग सूंड़रद मूलनख करत  
 जीव जड़ घाउ ३४५ तुलसी जगजीवन अहित कतहूं कोउ हित  
 जानि ॥ शोषक भानु कृशानु महि पवन एक घन दानि ३४६  
 सुनिय सुधा देखी गरल सब करतूति कराल ॥ जहँ तहँ काकउलूक  
 बक मानस सुकृत मराल ३४७ जलचर थलचर गगनचर देवदनुज  
 नरनाग ॥ उत्तम मध्यम अधम खल दशगुण बढ़त विभाग ३४८



बलिमिस देखे देवता करमिस मानवदेत ॥ मुये मार अब चारहत  
 स्वारथ साधन हेत ३४६ सुजन कहत भल पोचपथ पायन परखे  
 भेद ॥ कर्मनाश सुरसरित मिस विधिनिषेध बदवेद ३५० मणि  
 भाजन मधुपारई पूरण अमी निहारि ॥ का छांडिय का संग्रही  
 कहहु विवेक विचारि ३५१ उत्तम मध्यम नीच गति पाहन सि-  
 कता पानि ॥ प्रीति परीक्षा तिहुँन को बैर व्यतिक्रम जानि ३५२  
 पुण्य प्रीति पति प्रापतिउ परमारथ पथ पांच ॥ लखहि सुजन परि  
 हरहि खल सुनहु सिखावन सांच ३५३ नीच निरादर ऊंचके आ-  
 दर सुखद विशाल ॥ कदली बदली बिटप गति पेखहु पनश र-  
 साल ३५४ तुलसी अपनो आचरण भलो न लागत कासु ॥ ते-  
 हि न बसात जो खात नित लहसुनहू को वासु ३५५ बुधसों वि-  
 वेकी विमल मति जेहिके रोष न राग ॥ सुहृद सराहत साधु जेहि  
 तुलसी ताको भाग ३५६ आपु आपु कहँ सब भलो आपन कहँ  
 कोइ कोइ ॥ तुलसी सबकहँ जो भलो सुजन सराहिय सोइ ३५७  
 तुलसी भलो सुसङ्गते पोच कुसङ्गति होइ ॥ नाउ किन्नरी तीर अमि  
 लाह विलोकहु लोइ ३५८ गुण संगति गुरु होइ सो लघु संगति  
 लघु नाम ॥ चारि पदारथमें गनै नरक द्वारहू काम ३५९ तुलसी  
 गुरु लघुता लहत लघु संगति परिणाम ॥ देवी देव पुकारियत नी-  
 च नारि नर नाम ३६० तुलसी किये कुसंगथिति होइ दाहिनी  
 बास ॥ कहि सुनि सकुचिय सूमखल गत हरशङ्कर नाम ३६१ बसि  
 कुसङ्ग चह सुजनता ताकी आस निरास ॥ तीरथहूको नाम भो  
 गया मगहके पास ३६२ राम कृपा तुलसी सुलभ गंग सुसंग स-  
 मान ॥ योजनपरै जो जन मिलै कीजै आपु सनान ३६३ ग्रह  
 भेषज जल पवन पटपाइ कुयोग सुयोग ॥ होइ कुवस्तु सुवस्तुजग



लखहिं सुलक्षण लोग ३६४ जन्म योग मैं जानियत जग विचित्र  
 गति देखि ॥ तुलसी आखर अङ्कस रंगे विभेद विशेखि ३६५  
 आखर जोरि विचार करु सुमति अङ्क लिखि लेखु ॥ योग कुयोग  
 सुयोगमय जग गति समुक्ति विशेखु ३६६ करु विचार चल सुपथ  
 भल आदि मध्य परिणाम ॥ उलटे जपे जे रामरा सूधे राजा राम  
 ३६७ होइ भले के अनभलो होय दानिके सूम ॥ होइ कपूत सपूत  
 के ज्यों पावकमें धूम ३६८ जड़ चेतन गुण दोषमय विश्व कीन्ह  
 करतार ॥ सन्त हंस गुण गहहिं पय परिहरि वारि विकार ३६९ ॥  
 सोरठा ॥ पाट कीटते होइ ताते पाटम्बर रुचिर ॥ कृमि पालै सब  
 कोइ परम अपावन प्राणसम ३७० ॥ दोहा ॥ जो जो जेहि जेहि  
 रस मगन तहँ सो मुदित मुनि मानि ॥ रस गुण दोष विचारिबो  
 रसिक रीति पहिंचानि ३७१ सम प्रकाशतम पाखदुहु नाम भेद  
 विधि कीन्ह ॥ शशिपोषक शोषक समुक्ति जग यश अपयश  
 दीन्ह ३७२ लोक वेदहँलौंदगा नाम भलेको पोच ॥ धर्मराज यम-  
 राज पवि कहत सकोच न शोच ३७३ बिरुचि परखि यह सुजन  
 जन राखि परखियहि मन्द ॥ बड़वानल शोषत उदधि हर्ष बढ़ा-  
 वत चन्द ३७४ प्रभु सन्मुख भय नीचनर निपट भये विकराल ॥  
 रबिरुख लखि दर्पण फटिक उगिलत ज्वाला जाल ३७५ प्रभु  
 समीपगत सुजन जन होत सुखद सो विचारि ॥ लवण जलधि  
 जीवन जलद बर्षत सुधा सवारि ३७६ नीच निरावहिं निरसतरु  
 तुलसी सींचहिं ऊख ॥ पोषत पयद समान सब बिष पियूषके रूख  
 ३७७ बरषि विश्व हर्षित करत हरत ताप अघप्यास ॥ तुलसी दोष  
 न जलद को जो जल जरै जवास ३७८ अमर दानि याचक मर-  
 हिं मरि मरि फिरि फिरि लेहि ॥ तुलसी याचक पातकी दातहि



दूषण देहिं ३७६ लखि गयंद लै चलहिं भजि श्वान सुखानो  
 हाड़ ॥ गज गुण मोल अहारवल महिमा जान किराड़ ३८० कै  
 निदरहुकै आदरहु सिंहहि श्वान सियार ॥ हरष बिषाद न केशरिहि  
 कुंजर गजहि निहार ३८१ ठाढ़ो द्वार न देसकै तुलसी जे नर  
 नीच ॥ निन्दहिं बलि हरिचन्द्रको का कियो करण दधीच ३८२  
 ईश शीश विलसत विमल तुलसी तरल तसंग ॥ श्वान सरावक  
 के कहे लघुता लहै न गंग ३८३ तुलसी देवला देवकी लागे  
 लाख करोरि ॥ काक अभागे हगिभरयो महिमा भई कि थोरि ३८४  
 निज गुण घटत न नाग नग परखि परोहत कोल ॥ तुलसी प्रभु  
 भूषण किये गुआ बड़ै न मोल ३८५ राकापति पौडश उअहिं  
 तारागण समुदाइ ॥ सकल गिरिन्ह दव लाइये विनु रवि राति न  
 जाइ ३८६ भलो कहै विन जानिहुं विनु जाने अपवाद ॥ ते नर  
 गादुर जानि जिय करिय न हर्ष बिषाद ३८७ परमुख सम्पति देखि  
 सुख जरहिं जे जड़ विनुआगि ॥ तुलसी तिनके भाग ते चलै भलाई  
 भागि ३८८ तुलसी जे कीरति चहहिं परकी कीरति खोइ ॥ तिनके  
 मुँह मसि लागिहै मिटिहि न मरिहैं धोय ३८९ तन गुण धन म-  
 हिमा धरम तेहि विनु जो अभिमान ॥ तुलसी जियत विड़म्बना  
 परिणामहि गत जान ३९० सासु ससुर गुरु मातु पितु प्रभु भयो  
 चहैं सबकोइ ॥ होनो दूजी ओरको मुजन सराहियसोइ ३९१ शठ  
 सहि सांसति पति लहत मुजन कलेश न काय ॥ गढ़ि गुढ़ि पाहन  
 पूजिये गण्डकि शिला सुभाय ३९२ बड़े विबुध दरबारते भूमिभूप  
 दरबार ॥ जापक पूजक पोखियत सहत निरादर भार ३९३ विनु  
 प्रपंच छल भीख भलि लहिय न कियेकलेश ॥ वामन बलिसों छल  
 कियो दियो उचित उपदेश ३९४ भलो भले से छल किये जन्म



कनौड़ो होइ ॥ श्रीपति शिर तुलसी लसति बलि वामनगति सोइ  
 ३९५ विबुध काज वामन बलिहि छलो भलो जियजानि ॥ प्रभुता  
 तजि बश मे तदपि मनकी गई न ग्लानि ३९६ सरल बक्र गति  
 पञ्चग्रह चपरि न चितवत काहु ॥ तुलसी सूखे शूर शशि समय  
 विडम्बित राहु ३९७ खलउपकार विकारफल तुलसी जानजहान ॥  
 मेडुक मरकट बनिक बक कथा सत्य उपखान ३९८ तुलसी खल  
 बाणी मधुर सुनि समुझिय हिय हेरि ॥ राम राज बाधक भई मूढ़  
 मन्थरा चेरि ३९९ जोंक मूधि मन कुटिल गति खल विपरीत वि-  
 चारु ॥ अनहितसों नित सोखसो सोहित शोषनहारु ४०० नीच  
 गुणी ज्यों जानिबो सुनि लखि तुलसीदास ॥ छीलिदियो गिरिप-  
 रतमहि खँचत चढ़त अकास ४०१ भरदरबरपत कोस शत बचै जे  
 बूंद बराइ ॥ तुलसी त्यों खल वचन शर हिये गये न पराइ ४०२  
 पेस्त कोल्लू मेलि तिल तिली सनेही जानि ॥ देखि प्रीतिकी रीति  
 यह अब देखी बरसानि ४०३ सहवास काचोगिलहि पुरजन पाक  
 प्रवीन ॥ कालक्षेप केहि मिलकरहिं तुलसी खग मृग मीन ४०४  
 जासु भरोसे सोइये राखि गोदपर शीश ॥ तुलसी तासु कुचाल ते  
 रखवारो जगदीश ४०५ मारि खोज लहि सोह करि करि मत  
 लाज न त्रास ॥ मुये नीचते मीच बिनु जे इनके विश्वास ४०६  
 परद्रोही परदारस्त परधन परअपवाद ॥ तेनर पामर पापमय देहधरे  
 मनुजाद ४०७ वचन वेषक्यों जानिये मन मलीन नरनारि ॥ शू-  
 र्पणखा मृगपूतना दशमुख प्रमुख विचारि ४०८ हँसनि मिलनि  
 बोलनि मधुर कटु करतव मनमाहँ ॥ छुवत जो सकुचै सुमति सो  
 तुलसी तिनकी छाहँ ४०९ कपटसार सूची सहस बांधि बचन पर-  
 वास ॥ कियो दुराउ चहै चातुरी सो शठ तुलसीदास ४१० वचन



विचार अचार तन मन करतब छलछूति ॥ तुलसी क्यों सुख पाइये  
 अन्तर्यामिहिधूति ४११ शारदूलको खांगकर कूकुरकी करतूति ॥  
 तुलसी तापर चाहिये कीरति विजय विभूति ४१२ बड़ेपाप बाढ़े  
 किये छोटे किये लजात ॥ तुलसी तापर सुखचहत विधिसों बहुत  
 रिसात ४१३ देशकाल करता करम बचन विचारविहीन ॥ ते सुर  
 तरुतर दारिदी सुरसरितीर मलीन ४१४ साहसही शिख कोपवश  
 किये कठिन परिपाक ॥ शठ सङ्कट भाजन भये हठि कुजाति कपि  
 पाक ४१५ राजकरत बिनु काजही करैकुचालि कुसाज ॥ तुलसी  
 ते दशकन्ध ज्यों जैहैं सहित समाज ४१६ राज करत विन का-  
 जही ठठहिं जे कूर कुअट ॥ तुलसी ते कर राज ज्यों जैहैं बारहवाट  
 ४१७ सभा सुयोधनकी शकुनि सुमति सराहन योग ॥ द्रोणविदुर  
 भीषम हरिहि कहैं प्रपञ्ची लोग ४१८ पाण्डुसुवन की सदसते नी-  
 को रिपु हित जानि ॥ हरिहरसम सब मानियत मोहजानकी बा-  
 नि ४१९ हितपरबढ़ै विरोध जब अनहितपर अनुराग ॥ रामविमुख  
 विधिवामगति सगुण अघायअभाग ४२० सहज सुहृद गुरुस्वामि  
 सिख जो न करै शिर मानि ॥ सो पछताय अघायउर अवशि  
 होइ हितहानि ४२१ भरुहाये नटभाटके चपरि चढ़े संग्राम ॥ कैवे  
 भाजै आयहैं कै बांधे परिणाम ४२२ लोकरीति फूटी सहै आंजी  
 सहै न कोइ ॥ तुलसी जो आंजी सहै सो आंधरो न होइ ४२३ भौ-  
 नेभल आड़ेहु भलो भलो न घालेउ घाउ ॥ तुलसी सबके शीश  
 पर रखवारो रघुराउ ४२४ सुमति विचारहिं परिहरहिं दल सुमनहुं  
 संग्राम ॥ सकुल गये तनु बिनु भये साखी यादव काम ४२५ क  
 लह न जानब छोटकरि कलह कठिन परिणाम ॥ लगति अगिन  
 लघु नीचगृह जरत धनिक धन धाम ४२६ रोषक्षमाके दोषगुण



सुनि मनु मानहि सीख ॥ अविचल श्रीपति हरिभये भूसुर लहै न  
 भीख ४२७ कौरव पाण्डव जानिये क्रोध क्षमाके सीव ॥ पांचहि  
 मारि न सहिसकै सबो सँहारे भीम ४२८ बोल न मोटे मारिये  
 मोटी रोटी मारु ॥ जीति सहजसम हारिवो जीते हारि निहारु  
 ४२९ जो परिपांय मनाइये तासों रूठि विचारि ॥ तुलसी तहां न  
 जीतिये जहँ जीते है हारि ४३० जूझते भल बूझिवो भली जीति  
 ते हारि ॥ डहँकेते डहँकाइवो भलो जो करिय विचारि ४३१ जा  
 रिपुसों हारेहु हँसी जिते पाय परितापु ॥ तासों रारि विचारिये स-  
 मय सम्हारै आपु ४३२ जो मधुमरै न मारिये माहुरदेइ जो काउ ॥  
 जगजीते हारे परशु हारिजिते रघुराउ ४३३ बैरमूलहर हितवचन प्रे-  
 ममूल उपकार ॥ दोहा शुभसन्दोहसी तुलसी किये विचार ४३४  
 शेष न रसना खोलिये बरु खोलिय तरवारि ॥ सुनत मधुर परिणाम  
 हित बोलिय वचन विचारि ४३५ मधुखचन कटुबोलिवो बिनुश्रम  
 भाग अभाग ॥ कुहूकुहू कलकण्ठरव काका करत काम ४३६ पेट  
 न फूलत बिनुकहे कहु तन लागे ढेरु ॥ सुमति विचारे बोलिये स-  
 मुझि कुफेरु सुफेरु ४३७ छिद्यो न तरुणि कटाक्षशर करेउ न क-  
 ठिन सनेहु ॥ तुलसी तिनकी देहकी जगतकवच करलेहु ४३८  
 शूरसमर करणी करहिं कहि न जनावहिं आपु ॥ विद्यमान रणपा-  
 यरिपु कायर कथहिं प्रलापु ४३९ वचनकहै अभिमानके पारथ  
 पेखतु सेतु ॥ प्रभु तियलूटत नीच नर जय न मीचु तेहि हेतु ४४०  
 राम लपण विजयी भये मनहु गरीबनिवाज ॥ मुखर बालि रावण  
 गये घरही सहित समाज ४४१ खग मृग मीत पुनीतकिय बनहु  
 राम नयपाल ॥ कुमति बालि दशकण्ठ घर सुहृद बन्धु कियेकाल  
 ४४२ लखै अघाने भूख ज्यों लखै जीतिमें हारि ॥ तुलसी सुमति



समहिये मग पगधरै विचारि ४४३ लाभ समयको पालिवो हानि  
 समयकी चूक ॥ सदा विचारहिं चारुमति सुदिन कुदिन दिनदूक  
 ४४४ सिन्धुतरण कपि गिरिहरण काज साइँ हित दोउ ॥ तुलसी  
 समयहि सम बड़ो बूझत कहँ कोउ कोउ ४४५ तुलसी मीठो अमी  
 ते मांगी मिलै जो मीचु ॥ सुधा सुधाकर समय विनु कालकूट ते  
 नीचु ४४६ तुलसी असमयको सखा धीरज धर्म विवेक ॥ साहित  
 साहस सत्यव्रत राम भरोसो एक ४४७ समर्थ कोउ न रामसो  
 सीयहरण अपराधु ॥ समयहि साधे काज सब समय सराहहिंसाधु  
 ४४८ तुलसी तीरहु के चले समय पाइवो थाह ॥ धाइ न जाइ थ-  
 हाइवो सर सरिता भवगाह ४४९ तुलसी जसि भवितव्यता तैसी  
 मिलै सहाय ॥ आपुन आवै ताहिपै कि ताहि तहां लैजाय ४५०  
 कै जुझिवो कै बूझिवो दान कि काय कलेश ॥ चारि चारु पर-  
 लोकपथ यथायोग उपदेश ४५१ पात पात को सींचिवो न करु  
 सरगतरु हेत ॥ कटिल कटुक फर फरैगो तुलसी करत अचेत ४५२  
 गढ़िबँधते परतीति बड़ि जेहि सबको सबकाज ॥ कहव थोर समु-  
 भव बहुत गाढ़े बढ़त अनाज ४५३ अपनो अपने करथपै तिय  
 पूजहिं निजभीत ॥ फलै सकल मनकामना तुलसी प्रीतिप्रतीत  
 ४५४ बरषत करषत आपुजल हरषत अर्वनिभानु ॥ तुलसीचाहत  
 साधु सुर सबसनेह सनमानु ४५५ श्रुति गुणकर गुनपुजुग मृग  
 यहि रेवती सखाउ ॥ देहि लेहि धन धरणिधरु गयहु न जाइहि  
 काउ ४५६ ऊगुनपूगुन विरजकम आभ अमू गुणसाथ ॥ हरो धरी  
 गाड़ो दियो घन फिरि चढ़े न हाथ ४५७ रवि हर दिश गुण रस  
 नयन मुनि प्रथमादिक बार ॥ तिथि सबकाज नशावनी होइ कुयोग  
 विचार ४५८ शशि शर नव दुइ छ दश गुण मुनि फल बसु हर



भानु ॥ मेषादिक क्रमते गनहि घातचन्द्र जिय जानु ४५६ नकुल  
 सुदरशन दरशनी क्षेमकरी चषचाष ॥ दशदिशि देखत सगुनशुभ  
 पूजहि मन अभिलाष ४६० सुधासाधुपुरतरुसुमन सुफल सुहावनि  
 बात ॥ तुलसी सीतापति भगति सगुन सुमङ्गल सात ४६१ भरत  
 शत्रुसूदन लषण सहित सुमिरि रघुनाथ ॥ करहु काज शुभ सांच  
 सब मिलहि सुमङ्गल साथ ४६२ राम लषण कौशिक सहित सुमि-  
 रहु करहु पयान ॥ लक्ष लाभलै जगत यश मङ्गल सगुन प्रमान  
 ४६३ अतुलित महिमा वेद की तुलसी किये विचार ॥ जो निंदत  
 निंदितभयो विदित बुद्धअवतार ४६४ बुद्धिकिसान सर वेद निज  
 मते खेत सब सीच ॥ तुलसी कृषि लखि जानिबो उत्तम मध्यमनीच  
 ४६५ सहि कुबोल सांसति सकल अँगइ अनट अपमान ॥ तुलसी  
 धर्म न परिहरिय कहि करिगये सुजान ४६६ अनहित भयपरहित  
 किये हरअनहित हितहानि ॥ तुलसी चारुविचारुभल करिय काज  
 सुनि जानि ४६७ पुरुषार्थ पूरवकरम परमेश्वर परधान ॥ तुलसी  
 पैरत सरित ज्यों सबहि काज अनुमान ४६८ चलहु नीतिमग राम  
 पग नेह निवाहन नीक ॥ तुलसी पहिरिय सो वसन जो न पखारे  
 फीक ४६९ दोहाचारु विचारुचलु परिहरि बादविवाद ॥ सुकृत सी-  
 वस्वारथ अवधि परमारथ मर्याद ४७० तुलसी समरथ सुमति जो  
 सुकृती साधु सयान ॥ जो विचारि व्यवहरिय जग खर्च लाभ अनु-  
 मान ४७१ जाइ योग जगक्षेम विनु तुलसी के हितराखि ॥ विन  
 पराध भृगुपति नहुष बेनु बकासुर साखि ४७२ बढिप्रतीति गठिब-  
 न्धते बड़ोयोगते क्षेम ॥ बड़ो सुसेवक सांइते बड़ो नेमतेप्रेम ४७३  
 शिष्य सखा सेवक सचिव सुतिय सिखावन सांच ॥ सुनिसमभहु  
 पुनि परिहरहु परम निरञ्जन पांच ४७४ नारिनगर भोजन सचिव



सेवक सखा अगार ॥ सरस परिहरे रहसरस निरस विषाद विकार  
 ४७५ दूटहिनिज रुचिकाज कीर रूठहिं काज बिगारि ॥ तीय त-  
 नय सेवक सखा मनके कण्ठकचारि ४७६ दीरघरोगी दारिदी कटु  
 बच लोलुप लोग ॥ तुलसी प्राणसमानते होई निरादरयोग ४७७  
 पाहीखेती लगनबढ़ ऋणकुब्याज मगखेत ॥ बैर बंदे सो आपने  
 किये पांच दुखहेत ४७८ धायलगै लोहा ललकि खींच लेइ नइ  
 नीचु ॥ समरथ पापीसों बयर जानि बिसाही मीचु ४७९ शोचिय  
 गृही जो मोहबस करै कर्मपद त्याग ॥ शोचिय यती प्रपञ्च रचि  
 विगत विवेक विराग ४८० तुलसी स्वारथ सामुही परमारथ तन  
 पीठ ॥ अन्ध कहे दुखपाइहै डिठिआरो केहि डोठ ४८१ बिनु आं-  
 खिनकी पानहीं पहिंचानत लखि पाइ ॥ चारिनयनके नारिनर  
 सूक्त मीच न माइ ४८२ जुपै मूढ़ उपदेशको होतो योग जहान ॥  
 क्यों न सुयोधन बोधकै आये श्याम सुजान ४८३ ॥ सोरठा ॥  
 फूलै फरै न बेत यदपि सुधा बरपहिं जलद ॥ मूख हृदय न चेत  
 जो गुरु मिलै बिरञ्चि शिव ४८४ ॥ दोहा ॥ रीझ आपनी बूझपर  
 खीझ विचारि विहीन ॥ ते उपदेश न मानहीं मोह महोदधिमीन  
 ४८५ मन समुझे अन शोचनो अवशि समुझिअहि आपु ॥ तु-  
 लसी आपु न समुझिये पल पल परि परितापु ४८६ कूप खनतम-  
 न्दिर जरत आये धारिबबूर ॥ बवहिं नवहिं निज काज शिर कु-  
 मतिशिरोमणि कूर ४८७ निडर ईशते बीस कै बीसबाहु सो होइ ॥  
 गयो गयो कहै सुमति सब भयो कुमति कह कोइ ४८८ जो सुनि  
 समुझि अनीतिरत जागतरतहै जुसोइ ॥ उपदेशबो जगाइबो तुलसी  
 उचित न होइ ४८९ बहुसुख बहुरुचि बचनबहु बहुअचार व्यवहार ॥  
 इनको भलो मनाइबो यह अज्ञान अपार ४९० लोगनि लोभ म-



नाइबो भलो होनकी आस ॥ करत गगनको आयउ सो शठ तु-  
 लसीदास ४९१ अपयशयोग कि जानकी मणिचोरी कवकान्हा ॥  
 तुलसी लोग रिझाइबो करपि कातिबो नान्ह ४९२ तुलसी जुपै  
 गुमान को हो तो कछु उपाउ ॥ तौ कि जानकिहि जानि जिय  
 परिहरते रघुराउ ४९३ मांगि मधुकरी खात ते सोवत गोड़पसा-  
 रि ॥ पाय प्रतिष्ठा बढ़िपरी ताते बाढ़ी रारि ४९४ तुलसी भेड़ी  
 की धसनि जड़ जनता सनमान ॥ उपजतही अभिमान भो खो-  
 वत मूढ़ अपान ४९५ लही आंखि कव आंधरे बांझ पूत कव  
 ल्याय ॥ कव कौड़ी काया लही जग बहराइचजाइ ४९६ तु-  
 लसी निरभय होत नर सुनियत सुरपुर जाइ ॥ सो गति देखियत  
 अछत तन सुख सम्यति गति पाइ ४९७ तुलसी तोस्त तीर तरु  
 बकहित हंसविडारि ॥ विगत नलिन अलि मलिन जल सुरसरिहूँ  
 बढ़ियारि ४९८ अधिकारी सब औसरा भलेउ जानिवे मन्द ॥ सु-  
 धासदन बसुवारहौं चउथिउ चउथो चन्द ४९९ त्रिविध एक विधि  
 प्रभु अनुग अवसर करहिं कुआट ॥ सूधो टेढ़ो सम विषम सब महँ  
 बारहवाट ५०० प्रभुते प्रभुगन दुखद लखि प्रजहिं सँभारैराउ ॥ करते  
 होत कृपाण की कठिन घोरघनघाउ ५०१ ब्यालहुते बिकराल  
 बड़ ब्यालफेन जिय जानु ॥ उहके खाये मरतहैं उहखाये विनुपानु  
 ५०२ कारणसे कारज कठिन होइ दोष नहिं मोर ॥ कुलिश अस्थि  
 ते उपलते लोह कराल कठोर ५०३ काल विलोकत ईशरुख भानु  
 काल अनुहारि ॥ रविहि राउ राजहि प्रजा बुध व्यवहरहि विचारि  
 ५०४ यथा कमलपावन पवन पाइ कुसङ्ग सुसङ्ग ॥ कहिअकुवास  
 सुवास तिमि काल महीशप्रसङ्ग ५०५ भलेहु चलतपथयोबभय नृ-  
 पतियोग नय नेम ॥ सुतिय सुभूपति भाषियत लोहपवारित हे-



म ५०६ माली भानु किसानसम नीतिनिपुण नरपाल ॥ प्रजा भाग  
 बश होहिंगे कबहुँ कबहुँ कलिकाल ५०७ बरषत हर्षत लोग सब  
 करषत लखै न कोइ ॥ तुलसी प्रजा सुभागते भूपभानुसोहोइ ५०८  
 सुधा सुनाज कुनाज पल आम अशनसम जानि ॥ सुप्रभु प्रजा  
 हित लेहि कर सामादिक अनुमानि ५०९ पाके पकये बिटप दल  
 उत्तम मध्यम नीच ॥ फलनरुलहै नरेश त्यों करि विचार मनबीच  
 ५१० सीभि खीभि गुरु देत सिख सखा सुसाहब साध ॥ तोरिखाय  
 फल होइ भल तरुकाटे अपराध ५११ धरणिधेनु चारित प्रजा तासु  
 बछये नहाइ ॥ हाथकछू नहिं लागिहै किये गोड़कीगाइ ५१२ चढ़ै  
 धुरै चक्र ज्यों ज्ञान ज्यों शोक समाज ॥ कर्म धर्म सुख सम्पदा  
 ज्यों जानिबेकुराज ५१३ कण्टक करिकरि परतगिरि शाखासहस  
 खजूरि ॥ मरहिं कुनृपकरि करि कुनृप सो कुचाल भवभूरि ५१४  
 कालतोपची तुपकमहि दारु अनय कराल ॥ पापपलीता कठिन  
 गुरु गोलापुहमीपाल ५१५ भूमिरुचिर रावणसभा अङ्गदपद महि-  
 पाल ॥ धरम रावणहि सीय बल अचल होत शुभकाल ५१६ प्रीति  
 रामपद नीतिरत धर्मप्रतीति सुभाइ ॥ प्रभुहि न प्रभुता परिहरहि  
 कबहुँ बचन मन काइ ५१७ करके कर मनके मनहि बचन बचन  
 गुण जानि ॥ भूपहि भूलि न परिहरै विजय विभूति सयानि ५१८  
 गोली बाण सुमन्त्र शर समुभि उलटि मन देखु ॥ उत्तम मध्यम  
 नीच प्रभु बचन विचारि विशेषु ५१९ शत्रु सयानो सलिल ज्यों  
 राखि शीश रिपु नाव ॥ बूड़त लखि पग डगत लखि चपरि चहुँ  
 दिशिधाव ५२० रैयत राजसमाज घर तन धन धर्म सुभाहु ॥ शांत  
 सुसचिवन सौपिसुख बिलसहिं नित नरनाहु ५२१ मुखिया मुखसों  
 चाहिये खान पानको एक ॥ पालै पोषै सकल अंग तुलसी सहित



विवेक ५२२ सेवक कर पद नयनसे मुखसे साहब होय ॥ तुलसी  
 प्रीति कि रीति सुनि सुकवि सराहहिं सोय ५२३ मन्त्री गुरु अरु  
 वैद्य जो प्रिय बोलहिं भय आश ॥ राज धर्म तन तीन कर होइ  
 बेगही नाश ५२४ रसना मन्त्री दशनजन तोष पोष निजकाज ॥  
 प्रभुकरसेन पदादिका बालक राजसमाज ५२५ लकड़ी डौआ क-  
 र्छुली सरसुकाज अनुहारि ॥ सो प्रभु संग्रह परिहरहि सेवक सखा  
 विचारि ५२६ प्रभु समीप छोटे बड़े निबल होत बलवान ॥ तुलसी  
 प्रकट बिलोकिये कर अंगुली अनुमान ५२७ साहबते सेवकबड़ो  
 जो निज धर्मसुजान ॥ राम बांधि उतरे उदधि नाँधिगयो हनुमान  
 ५२८ तुलसी भल बरतरु बढ़त निज मूलहि अनुकूल ॥ सबहि  
 भांति सबकहँ सुखद दलनि फलनि बिनु फूल ५२९ सघन सगुण  
 सधरम सगण सबल समाइ महीप ॥ तुलसी जे अभिमानविन ते  
 त्रिभुवन के दीप ५३० तुलसी निज करतूति बिनु मुक्तजानि जब  
 कोइ ॥ गयो अजामिल लोकहरि नाम सक्यो नहिं धोइ ५३१  
 बड़ो गहेते होत बड़ ज्यों बावनकर दण्ड ॥ श्रीप्रभुके संगसों बड़ी  
 गयो अखिल ब्रह्मण्ड ५३२ तुलसी दान जो देत हैं जल में हाथ  
 उठाय ॥ प्रतिग्रही जीवै नहीं दाता नरकै जाय ५३३ आन न  
 छोड़ो साथ जब तादिन हितून कोइ ॥ तुलसी अम्बुज अम्बुविन  
 तसणि तासु रिपु होइ ५३४ उरबी परिकुलहीनहीं ऊपर कला प्र-  
 धान ॥ तुलसी देखु कलाय गति साधन धन पहिंचान ५३५ तु-  
 लसी संगति पोचकी सुजन होति भयदानि ॥ यौ हरिरूप सुताहिते  
 कीनो गोहरि आनि ५३६ कलिकुचालि शुभमतिहरणि सरलैदंडै  
 चक्र ॥ तुलसी यह निश्चय भई बाढ़ी लेत न बक्र ५३७ गो खग  
 शेष गवारिखग तीनोंमाह विशेष ॥ तुलसी पीवैं फिरचलैं रहैं फिरैं



सँग एक ५३८ साधन समय सो सिद्धिलहि उभै मूल अनुकूल ॥  
तुलसी तीनिउ समय सम ते महिमङ्गलमूल ५३९ मातु पिता गुरु  
स्वामि सिख शिरधरि करहिं स्वभाय ॥ लहेउ लाभ तिन जन्मकर  
नतरु जन्म जग जाय ५४० अनुचित उचित विचार तजि जे पा-  
लहिं पितु बैन ॥ ते भाजनमुख सुयशके बसहिं अमरपतिऐन ५४१  
सोरठा ॥ सहज अपावनि नारि पति सेवत शुभगति लहै ॥ यश  
गावत श्रुति चारि अजहुं तुलसिका हरिहिं प्रिय ५४२ दोहा ॥  
शरणागत कहैं जे तजहिं निज अनहित अनुमानि ॥ ते नर पाँवर  
पापमय तिन्हैं विलोकतहानि ५४३ तुलसी तृण जलकूलको नि-  
रधन निपट निकाज ॥ कीराखै की सँगचलै बाँहगहेकीलाज ५४४  
रामायण अनुहरत सिख जगभयो भारत रीति ॥ तुलसी शठकीको  
सुनै कलिकुचालिपर प्रीति ५४५ पात पातके सींचिवे बरी बरीके  
लौन ॥ तुलसी खोटे चतुरपनि कलि डहके कहु कौन ५४६ प्रीति  
सगाई सकल गुण बाणिज उपाय अनेक ॥ कलबलछल कलिमल  
मलिन डहकत एकहिएक ५४७ दम्भसहित कलिधर्म सब छल  
समेत व्यवहार ॥ स्वास्थ्यसहित सनेह सब रुचि अनुहरत अचार  
५४८ चोर चतुर बटपार भट प्रभु प्रिय भरुहाभण्ड ॥ सबभक्षक पर-  
मारथी कलिसुपन्थ पाखण्ड ५४९ अशुभ वेष भूषण धरैं भक्ष अ-  
भक्ष जे खाहिं ॥ ते योगी ते सिद्ध नर पूजित कलियुगमाहिं ५५०  
सोरठा ॥ जे अपकारी चार तिन कर गौरव मान तेइ ॥ मन बच  
कर्म लवार ते बक्ता कलिकालमहैं ५५१ दोहा ॥ ब्रह्मज्ञान विनु  
नारि नर कहहिं न दूसरि बात ॥ कौड़ीलगिते मोहवश करहिं विप्र  
गुरुघात ५५२ बादहिं शूद्र द्विजन सन हम तुमते कछु घाटि ॥  
जानहिं ब्रह्म सो विप्रवर आखि दिखावहिं डाटि ५५३ साखी सब-  
दी दोहरा कहि केहिनी उपखान ॥ भगति निरूपहिं भगतकलि  
निन्दहिं वेद पुरान ५५४ श्रुति सम्बत हरिभक्तिपथ संयुत विरति  
विवेक ॥ तेहि परिहरहिं विमोहवश कलपहिं पन्थ अनेक ५५५  
सकल धर्म विपरीत कलि कलपित कोटि कुपन्थ ॥ पुण्य पराय



बहारबन दुर पुराण शुभग्रन्थ ५५६ धातुवाद निरुपाधिवर सदगुरु  
 लाभ समीत ॥ देवदरश कलिकाल में पोथिन दुरे समीत ५५७  
 शूरसदन तीरथ पुरन निपट कुचालि कुसाज ॥ मनहुँ मवासे मारि  
 कलि राजत सहित समाज ५५८ गौड़ गवार नृपालमहि यमन  
 महामहिपाल ॥ सामन दामन भेदकलि केवल दण्ड कराल ५५९  
 फोरहि शिल लोढ़ा सदन लागे अटुक पहार ॥ कायर कूर कपूत  
 कलि घर घर सहसड़हार ५६० प्रकट चारि पथ धर्म के कलिमहँ  
 एक प्रधान ॥ येन केन विधि दीन्हहु दान करें कल्याण ५६१  
 कलियुग समयुग आन नहिं जो नर कर विश्वास ॥ गाइ राम  
 गुणगण विमल भवतर विनहिं प्रयास ५६२ श्रवण घटहु पुनि  
 दृगघटहु घटौ सकल बल देह ॥ इते घटे घटि है कहा जो न घटै  
 हरि नेह ५६३ तुलसी पावस के समय धरी कोकिलन मौन ॥  
 अबतौ दादुर बोलि है हमैं पूछि है कौन ५६४ कुपथ कुतर्क कुचालि  
 कलि कपट दम्भ पाखण्ड ॥ दहन रामगुणग्रामजिमि ईधन अनल  
 प्रचण्ड ५६५ सोरठा ॥ कलि पाखण्डप्रचार प्रबल पापपामरपतित ॥  
 तुलसी उमै आधार रामनाम सुरसरि सलिल ५६६ दोहा ॥ राम-  
 चन्द्र मुखचन्द्रमा चित चकोर जब होइ ॥ रामकाज सब काम शुभ  
 समय सुहावन सोइ ५६७ बीज रामगुणगण नयन जल अंकुर पु-  
 लकालि ॥ सुकृती सुनत सुखेत बर विलसत तुलसीशालि ५६८  
 तुलसी सहितसनेह नित सुमिरहु सीताराम ॥ सगुण सुमङ्गलशुभ  
 सदा आदि मध्य परिणाम ५६९ पुरुषार्थ स्वारथ सकल परमारथ  
 परिणाम ॥ सुलभ सिद्धि सब साहवी सुमिरत सीताराम ५७० म-  
 णिमय दोहा दीप जहँ उर घर प्रकट प्रकाश ॥ तहँ न मोहमयतम  
 तमी कलिकज्जली बिलाश ५७१ का भाषा का संस्कृत प्रेम चा-  
 हिये सांच ॥ काम जो आवै कामरी कालै करै कुमांच ५७२ ॥

इति श्रीगोसाईतुलसीदासकृतदोहावलीसम्पूर्णा ॥





# इतिहास



## रामायण गुटका का

विदित होकि कलिकलुषविध्वंसिनी काव्य भाषा में जैसी रामभक्तशिरोमणि महात्मा तुलसीदासजी की है तैसी आजतक किसी कविकी हुई न होगी इसमें बहुत कथन करनेकी आवश्यकताही नहीं अब यह गुटकारामायण जैसी कि इस यन्त्रालयमें मुद्रित हुई है उसकी उत्तमताका प्रभाव तो अवश्यही कथन करने का प्रयोजन है क्योंकि सम्पूर्ण भरतनिवासी अथवा और कोई खण्ड के रहनेवाले जबतक किसी पदार्थ का गुण न जानेगे तब तक उनकी रुचि उसमें होना सर्वथा असंभवही है इससे इण रामायणगुटका का गुण प्रथम तो एक यही बड़ाभारी है कि जैसी शुद्धता के साथ यह अब छपी है खरीदारों को ऐसी छोटी रामायण शुद्ध कभी प्राप्त न भई होगी कारण यह कि मालिक मतवाने खुदही पहिलेही से अपने शोधकों को यह आज्ञा देरक्खी कि इसको यथारुचि से चार और पांचबार जहां-तक अशुद्धता की सम्भावनाहो तहांतक शुद्ध पढ़के छपवाइये दूसरे यह कि सातकाण्ड तो सबही रामायण में होते हैं इसमें आठवां लवकुशकाण्ड भी युक्त है तिसपर भी एक यन्त्री क्या मानो रामायण की मंत्रीही है जो कि श्रीसच्चिदानन्द आनन्दकन्द दशरथनन्दन की आदि से अन्ततक मय तिथियों के सर्व्व रामायणही को ज्ञात कराती है और अग्निवेश रामायण भी इसमें युक्त है तिस पर भी कागज साचिक्कण श्वेतजैसी बम्बई की पसन्द कीजाती है इस रामायण गुटका में वह सब मौजूद हैं लेकिन बहुत थोड़ी छपीगई है अफसोस है कि जो शीघ्रता न करेंगे उनको यह प्राप्त होना बड़ाही दुष्कर है अथवा गुटकारामायण अबकी छपी मिलेहीगी क्यों कारण यह कि ऐसी मनोहर अल्प मोलपर बिकेगी तो जो एक खरीदैगा वह चार रख छोड़ने को जरूरही लैलेगा ॥

लेखक अथवा अनुवादक

इ. चरतमज-लखनऊ.